JANUARY TO MARCH 2014-15

त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी, फरवरी, मार्च 2015

आगामी तीन माह के प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	प्याज	रॉयल सलेक्शन	प्याज की अधिक उपज देने वाली किस्म का आकलन	01	04
2.	चना	जे.जी. 226	चना में फली भेदक नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	04	04
3.	चना	जे.जी. 226	चना में कॉलर राट रोग नियंत्रण हेतु ट्राइ-कोडर्मा विरिडी के प्रभाव का आकलन	02	04
4.	टमाटर	करिश्मा	टमाटर के पछेती रोग नियंत्रण हेतु जैव कारक एवं रासायनिक दवाईयों का आकलन	02	04
5.	गेहूँ	रतन	गेहूँ की स्वचलित रीपर से कटाई का आकलन	03	06
6.	पैरा/गन्ना	टाइकोडर्मा विरिडी	पैरा /गन्ना के पत्ते के टाइकोडर्मा विरिडी से अपघटन का आकलन	02	04
7.	मछली	रोहू,कतला	तालाब में संचय पूर्व मछली उत्पादन का आकलन	0.4	04
8.	गाय	संकर नस्ल	दुध उत्पादन के लिए मेथोचिलेटेड मिनरल मिक्चर का आकलन	04 पशु संख्या	04
9.	बछड़ा/ बछड़ी	देशी	बाह्यपरजीवी नियंत्रण हेतु नीम एवं करंज तेल के प्रभाव का आकलन	14 पशु संख्या	07
योग				18.3	41

अंग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	चना	इंदिरा चना	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	चना	जे.जी.-74	चने में कतार बोनी हेतु सीड कम फर्टिलाइजर डील का प्रदर्शन	12	12
3.	गेहूँ	जे.डब्लु-273	गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण का प्रदर्शन	12	12
4.	गन्ना	सी.ओ.-86032	गन्ने में लाल सड़न नियंत्रण हेतु गर्म जल एवं रासायनिक नियंत्रण का प्रदर्शन	12	12
5.	टमाटर	करिश्मा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	02	12
6.	अरहर	आशा	अरहर की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
7.	अजोला	अजोला पिन्नाटा	दुधारू पशुओं के आहार के रूप में अजोला उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन	02 टैंक	12
8.	अजोला	अजोला पिन्नाटा	बकरी के आहार के रूप में अजोला उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन	02 टैंक	12
9.	मछली/ बत्तख	रोहू, कतला मृगल	मछली सह बत्तख पालन का प्रदर्शन	02	12
योग				68	108

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वालीतकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	चना	जे.जी.226	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				24	24

कृषकों एवं कृषि महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	20	60
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	80	80
प्रक्षेत्र दिवस	03	300
टाईकोडर्मा उत्पादन प्रशिक्षण	02	100
पशु स्वास्थ्य शिविर	02	200
योग	107	740

बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	चना	J.G. - 6	आधार	08
2.	मूंग	H.U.M.-12	प्रजनक	01
3.	चना	वैभव	प्रमाणित	03
योग				12

कृषि महाविद्यालय में अध्यापन

क्र.	अधिकारी का नाम	पदनाम	महा.वि.मे अध्यापन	वर्ष	वि.सं.
1.	डॉ.बी.पी.त्रिपाठी	प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक (पौध रोग विज्ञान)	कृ.महा.विद्या.एवं अनु. केन्द्र बेमेतरा	प्रथम	1
2.	डॉ. नूतन रामटेके	विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन)	संत कबीर कृ. महाविद्यालय एवं अनु. केन्द्र कवर्धा	द्वितीय	1
			कृ.महा.विद्या.एवं अनु. केन्द्र बेमेतरा	द्वितीय	1
योग					3

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. .....
.....
.....

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-20 | त्रैमासिक पत्रिका, जनवरी,फरवरी, मार्च 2015 | वर्ष-8

संपादक मंडल

संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी. ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएँ, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
आंच. परियोजना निदेशक जोन -7(भा.कृ.अनु.परि.)जबलपुर

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन

सह संपादक :
श्रीमती प्रमिला कांत
उद्यानिकी
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी
श्री बी.एस. परिहार
सस्य विज्ञान
मनीषा खापर्डे
मात्स्यकी
श्रीमती स्वाती शर्मा
तकनीकि सहायक
श्री वाई.के कौशिक
तकनीकि सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

इं.गा.कृ.वि.,रायपुर के कुलपति जी का कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में भ्रमण

माननीय कुलपति महोदय इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के डॉ. एस. के. पाटिल एवं डॉ. ए. के. द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा, सहायक संचालक, उद्यानिकी श्री एम.पी.एस. चौहान, सहायक यंत्री, श्री ए.के. पाण्डेय एवं सहायक मात्स्यिकी अधिकारी, श्री वाई.के. डिंडोरे द्वारा दिनांक ०१.१०.२०१४ कृषि विज्ञान केन्द्र, का भ्रमण किया गया। इस अवसर पर प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. बी. पी. त्रिपाठी, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में माननीय कुलपति महोदय के समक्ष जिले के प्रगतिशील कृषकों ने खेती से जुड़ी विषयों पर विस्तृत चर्चा की। इस कृषक संगोष्ठी में अतिरिक्त संचालक कृषि श्री एम.एस. केरकट्टा, उप संचालक कृषि नागेश्वर लाल पाण्डेय, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, राजनांदगांव डॉ. ए.के. दुबे, अधिष्ठाता, उद्यानिकी महाविद्यालय, राजनांदगांव डॉ. पी. दुबे, प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. के.पी. वर्मा, अधीक्षक, भौतिक संयंत्र, कृषि विज्ञान केन्द्र,कवर्धा के विषय वस्तु विशेषज्ञ एवं ३० प्रगतिशील कृषकों की सहभागिता रही।

मासिक कार्यशाला का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा ०९.१२.२०१४ को मासिक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें जिले के चारो विकासखंडो के वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी, कृषि विकास अधिकारी एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के समस्त कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जिले के विगत माह एवं आगामी माह की कृषि कार्य पर विस्तृत चर्चा की गई।

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

दिनांक ०६.११.२०१४ को ग्राम बोड़ला में कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया । जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. बी.पी. त्रिपाठी , इंजी. टी. एस. सोनवानी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (फार्म मशीनरी), श्री बी. एस. परिहार विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) तथा कृषि विभाग के अनुविभागीय अधिकारी पी.डी. हथेश्वर एवं सहायक संचालक कृषि पी.जी. गोस्वामी उपस्थित थे। यह प्रक्षेत्र दिवस कृषकों को धान की किस्म कर्मासुरी के बारें में जानकारी देने के लिए रखा गया था। जिसके तहत कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बोड़ला ब्लाक के १२ कृषकों के यहां इस किस्म का प्रदर्शन किया गया था। कृषक ज्यादातर स्वर्णा धान की किस्म अधिक लगाते है क्योकिं इस किस्म से कृषकों को उत्पादन अधिक मिलता है किन्तु इस किस्म में झुलसा बिमारी का प्रकोप भी अधिक होता है अत: इस किस्म को इसकी उत्पादकता के साथ स्थानांतरित करने के लिए कर्मा मासुरी धान का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। क्योंकि यह किस्म उत्पादन तो अधिक देती ही है साथ इसमें झुलसा रोग का प्रकोप भी अपेक्षाकृत कम होता है। प्रक्षेत्र दिवस में कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ.बी.पी. त्रिपाठी ने कृषकों को धान के झुलसा रोग, जीवाणु जनित रोग, एवं कंडवा की विस्तृत जानकारी किसानों को दी। सस्य विज्ञान के विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री बी.एस. परिहार ने कृषकों को सस्य किया एवं उर्वरक प्रबंधन के संबंध में विस्तार से समझाया। इंजी. टी.एस. सोनवानी ने कृषकों को कृषि यंत्रों के उपयोग एवं रख रखाव के संबंध में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के कृषि विस्तार अधिकारी श्री बृजमोहन चंद्रवंशी एवं बोड़ला ब्लाक के आस पास गांव के लगभग १०० से अधिक किसानों ने कृषि की नई तकनीकी की जानकारी प्राप्त की।

कृषि की उन्नत जानकारी हेतु संपर्क करें, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.) फोन नं. 07741-299124 एवं किसान कॉल सेन्टर, 1800 180 1551 (निःशुल्क)।

JANUARY TO MARCH 2014-15

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

कृषक संगोष्ठी में आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में दिनांक ०४.११.२०१४ को एक वृहद कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कार्ड एनजीओ के तहत मण्डला जिले की स्वयं सहायता समूह की कुल ६० आदिवासी कृषक महिलाओं ने इस कृषक संगोष्ठी में भाग लिया एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा का भ्रमण किया। कृषक संगोष्ठी के दरम्यान कृषक महिलाओं को प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बी. पी. त्रिपाठी द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियां जैसे अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र परीक्षण, आदिवासी कृषक एवं कृषक महिलाओं को प्रशिक्षण आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके साथ ही कृषक महिलाओं को स्वरोजगार हेतु मशरूम उत्पादन तकनीकी के बारे में विस्तृत जानकारी दी जैसे मशरूम स्पान बीज कैसे बनाते है, एवं मशरूम उत्पादन के लिए कौन से माध्यम है, और उससे क्या क्या उत्पाद बनाते है जैसे मशरूम पापड़, मशरूम बड़ी, मशरूम आचार एवं अन्य व्यंजन बनाने की तकनीकी के बारे में बताया जिससे कृषक महिलायें इसका उपयोग कर अपने बच्चों को कुपोषण से दूर रख सकती है साथ ही इसका व्यवसायिक स्तर पर उत्पादन कर आय का उत्तम स्त्रोत बना सकती है। कृषक संगोष्ठी में श्री बी. एस. परिहार सस्य वैज्ञानिक द्वारा आदिवासी कृषक महिलाओं को खेती किसानी मे स्वरोजगार के अवसर के बारे में बताया। कार्ड एनजीओ के श्री अनिल कुमार शुक्ला कृषि विशेषज्ञ उपस्थित थे।

ग्रामिण युवाओ / कृषि स्नातकों को प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में दिनांक ०७ अक्टुबर से १३ अक्टुबर २०१४ तक संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा एवं भोरमदेव कृषि महाविद्यालय, कवर्धा के स्नातक कृषि अंतिम वर्ष के कुल ५० छात्रों को कुल सात दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण की शुरूआत कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा किया गया जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियां जैसे प्रक्षेत्र प्रदर्शन, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, ग्रामीण कृषकों एवं कृषक महिलाओं को प्रशिक्षण आदि की विस्तृत जानकारी दी गयी । पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बी.पी. त्रिपाठी, द्वारा खरीफ फसले जैसे सोयाबीन, धान, अरहर, मूंग, उड़द आदि के कीट व्याधि की पहचान एवं समन्वित प्रबंधन तथा मशरूम उत्पादन तकनीकी के बारे में बताया गया, साथ में रबी फसले जैसे चना, गन्ना, की बीमारी एवं ट्राइकोडर्मा जैव फंफूदनाशक उत्पादन तकनीकी की जानकारी दी गई। वैज्ञानिक प्रमिला कांत द्वारा सब्जियों की नर्सरी प्रबंधन, उत्पादन एवं फूलो फलो की खेती कैसे करें इस पर जानकारी दी गई, डॉ. नूतन रामटेके द्वारा पशुपालन एवं प्रबंधन संबंधित जानकारी दी गई। इंजीनियर टी. एस. सोनवानी द्वारा कृषि यंत्रो का समुचित प्रयोग एवं रख रखाव के बारे में जानकारी दी एवं श्री बी.एस. परिहार, शस्य वैज्ञानिक द्वारा प्रक्षेत्र प्रबंधन एवं अन्तवर्तीय फसलो की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के समापन मे वैज्ञानिक द्वारा कृषि में स्वरोजगार के अवसर की पहलुओ पर भी सभी नवयुवकों को जानकारी दी गई।

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	प्याज	रॉयल सलेक्शन	प्याज की अधिक उपज देने वाली किस्म का आकलन	01	04
2.	चना	जे.जी. 226	चना में फली भेदक नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	04	04
3.	चना	जे.जी. 226	चना में कॉलर राट रोग नियंत्रण हेतु ट्राइ-कोडर्मा विरिडी के प्रभाव का आकलन	02	04
4.	टमाटर	करिश्मा	टमाटर के पछेती रोग नियंत्रण हेतु जैव कारक एवं रासायनिक दवाईयों का आकलन	02	04
5.	गेहूँ	रतन	गेहूँ की स्वचलित रीपर से कटाई का आकलन	03	06
6.	पैरा/गन्ना	टाइकोडर्मा विरिडी	पैरा /गन्ना के पत्ते के टाइकोडर्मा विरिडी से अपघटन का आकलन	02	04
7.	मछली	रोहू,कतला	तालाब में संचय पूर्व मछली उत्पादन का आकलन	0.4	04
8.	गाय	संकर नस्ल	दुग्ध उत्पादन के लिए मेथोचिलेटेड मिनरल मिक्चर का आकलन	04 पशु संख्या	04
9.	बछड़ा/ बछड़ी	देशी	बाह्यपरजीवी नियंत्रण हेतु नीम एवं करंज तेल के प्रभाव का आकलन	14 पशु संख्या	07
योग				18.3	41

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	स्वर्णा	झुलसा रोग नियंत्रण हेतु रासायनिक दवाई (फोलीक्योर) का प्रदर्शन	12	12
2.	धान	कस्मा मासुरी	धान की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
3.	सोयाबीन	जे.एस.-95-60	सोयाबीन की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
4.	बरबट्टी	इंदिरा बरबट्टी लाल	बरबट्टी के उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.9	07
5.	अरहर	आशा	अरहर की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				48.9	55

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	उड़द	TAU-1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				24	24

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मात्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	12	35
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	60	60
योग	72	95

सामयिक सलाह -2015

क्या करें.....? कब करें.....? क्यों करें.....?

जनवरी माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- समय से बोये गेहूँ में २०–२५ दिन के अंतराल पर सिंचाई करें, किरीट जड़ अवस्था में नत्रजन डालें, एक माह बाद नींदा नियंत्रण करें।
- गन्ने की बुआई का कार्य पूर्ण करें।
- गन्ने की बुआई के समय बीजोपचार (टेबुकोनाजोल ०.०१ प्रतिशत) को हिसाब से करें।
- चने में हल्की सिंचाई करें।
- चने में इल्ली नियंत्रण हेतु ट्राइजोफास ३५० मि.ली. प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।
- चना, मटर, मसूर, सरसों, अलसी में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें, कटुआ इल्ली के प्रकोप से रक्षा करें एवं असिंचित अवस्था में २ प्रतिशत यूरिया घोल कीटनाशक के साथ ही छिड़काव करें।
- गन्ने की शीतकालीन फसल बढ़वार पर होती है अत: सिंचाई करना आवश्यक है।
- शीतकालीन गन्ने में नत्रजनयुक्त उर्वरक (यूरिया) का एक चौथाई भाग दें, पकी हुई फसल की कटाई कर कारखाना अथवा बाजार भिजवाने की व्यवस्था करें, गुड़ बनाने का कार्य करें।

उद्यानिकी

- प्याज की फसल में नत्रजन की आधी मात्रा देकर सिंचाई करें।
- प्याज में बैंगनी धब्बा रोग से बचाव के लिए ब्लाईटाक्स–५० या डायथेन एम–४५ नामक दवा का छिड़काव रोगर कीटनाशक दवा के साथ करें।
- मिर्च में फल गलन के नियंत्रण हेतु ब्लाईटाक्स ५० का छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में अच्छी फलत के लिए लकड़ी लगाकर सहारा दें।
- आलू की फसल में पछेती झुलसा नामक रोग के नियंत्रण हेतु ०.२% प्रतिशत डायथेन एम–४५ या १ प्रतिशत बोडो मिश्रण का छिड़काव करें।
- आम के वृक्ष में चेपा कीट की रोकथाम के लिए ग्रीस का लेप मुख्य तनों पर जमीन से १ मीटर की ऊँचाई तक करें।
- सब्जी फसलों में चूर्णी फफूंदी रोग से बचाव के लिए ०.१ प्रतिशत वाविस्टीन घोल का छिड़काव १५ दिन के अंतराल से दो बार करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को लगाने हेतु बीज को प्लास्टिक की थैली में लगाकर पॉलीहाउस में रखें जिससे अंकुरण शीघ्र होगा।
- जनवरी माह में टमाटर के पौधों को रोपने से अप्रैल माह में फल मिलना शुरु हो जाता है जबकि इस समय बाजार में टमाटर की आवक कम रहती है जिससे बाजार मूल्य अधिक मिलेगा।
- गेंदा में फूलों के नीचे माइट का प्रकोप होता है इसमें फूलों की कलियों के नीचे धूल से लक्षण दिखते है। रोकथाम के लिए सामान्यत: रोगर/मोनोक्रोटोफास का १ मि.ली. एक लीटर पानी में छिड़काव करें।
- गुलाब में रोज मिक्चर १५–१५ दिन के अंतराल पर अवश्य दें।

पशुपालन

- पशुओं को पेट के कीड़ो की दवाई नियमित दें।
- दुधारु पशु के थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं का बिछावन समय–समय पर बदलवाते रहें।
- अधिक बरसीम खिलाने से पशु को अफरा हो सकता है, अफरा होने पर ५०० ग्राम सरसों के तेल में ६० ग्राम तारपीन का तेल मिला कर दें।
- पशु के सम्पूर्ण विकास के लिए खनिज मिश्रण ५०–६० ग्राम दें।

फरवरी माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- गन्ने की बुवाई उपरांत गुड़ाई के समय कारटाफ हाइड्रोक्लोर ४ जी ७कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नालियो में छिड़काव करें।
- गन्ने में खरपतवार नियंत्रण हेतु खरपतवारनाशी ऐट्राजीन का छिड़काव करें।
- शीतकालीन गन्ने में निंदाई, गुड़ाई करें तथा फोरेट १० जी दवा को कूड़ों में डालकर सिंचाई करें।
- बसंतकालीन गन्ने की उन्नत किस्म का चुनाव कर बीजोपचार कर लें, खेतों में नाली बनाकर खाद एवं उर्वरक डालें, गन्ने के दो से तीन आंखों वाले टुकड़े लगायें।
- मूंग, मक्का, उड़द, सूर्यमुखी, मूंगफली, तिल, लोबिया एवं चारा फसलों की बुआई करें।
- गेहूँ एवं अन्य रबी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, असिंचित अवस्था में २–३ प्रतिषत यूरिया घोल का छिड़काव करें।
- बरसीम, जई, लूसर्न, मक्का आदि चारा फसलों में सिंचाई व अवस्थानुसार कटाई करें।
- जनवरी में बोई गई फसलों में सिंचाई व गुड़ाई करते रहें।
- तिवड़ा, मटर, चना की कटाई करें।

उद्यानिकी

- फलदार वृक्षों जैसे आम, आंवला, चीकू, कटहल आदि में फूल एवं फल आते समय सिंचाई बंद रखें।
- आम में गुच्छा रोग से ग्रस्त पुष्प गुच्छों को नष्ट कर दें, एवं पोटेशियम मेटाबाईसल्फेट का १ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- नये लगाये गये आम, अमरुद, आंवला, कटहल, चीकू, नींबू आदि पौधों में सिंचाई करें।
- आम का फुदका कीट एवं चूर्णी फफूंदी से बचाव के लिए कार्बोरिल डस्ट २ ग्राम और सल्फेक्स ३ ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- फरवरी माह में केला एवं पपीता लगाने की तैयारी करें, गोभीवर्गीय फसल में ७५० मि.ली. मिथाइल डेमेटान २५ ई. सी. दवा छिड़कें।
- आलू की फसल खुदाई के पहले सिंचाई बंद कर देवें और जमीन से ऊपर पौधे की कटाई कर दें, इससे आलू के कंद पुष्ट होगें।
- अदरक, हल्दी एवं कंद वर्गीय फसलों की खुदाई करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों की बोआई एवं पहले से तैयार पौधों की रोपाई करें, भिण्डी की बोआई करें, धनिया एवं सौफ की फसल में चूर्णी फफूद से बचाव हेतु ०.२ प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें।
- ग्रीष्म काल के प्रारंभ में फूल प्राप्त करने के लिए गेंदे की बुआई करें, रजनीगंधा में खाद एवं उर्वरक दें, घीक्वांर (एलोवेरा) के नये पौधे निकालकर बेचें, मेन्था के सकर्स नर्सरी में लगायें, सफेद मूसली की कंद की खुदाई कर धोयें तथा छीलकर सुखायें।
- इस माह भिण्डी, मिर्च तथा खीरे की बुआई करें।
- केला पपीता लगाने की तैयारी करें।

पशुपालन

- गाय व भैंस के गर्मी में आने पर उत्तम नस्ल के सांड से समय पर गाभिन करवायें।
- ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें।
- नवजात बछड़े – बछड़ियों को अन्त: परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- दुधारु पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बांध (फुल मिल्किंग) कर निकालें।
- बरसीम व गई फसल की सही अवस्था पर चारे के लिये कटाई करते रहें।

मार्च माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- चना, अलसी, तिवड़ा, मटर, राजमा, मसूर एवं सरसों इत्यादि फसलों की कटाई कर ग्रीष्मकालीन फसलों हेतु खेत की तैयारी करें।
- चना कटाई उपरांत उचित भण्डारण करें।
- गन्ने की बुआई बीजोपचार के बाद करें।
- गन्ने की शरदकालीन फसल में हल्की मिटटी चढ़ायें तथा सिंचाई करते रहें अग्र तना छेदक कीट प्रकोप से फसल बचाने हेतु फोरेट १० जी, या कार्बोसूरान ३ जी दानेदार दवा का प्रयोग करें।
- गन्ने की बोआई मासांत तक सम्पन्न करें, बोने के ७–१० दिन बाद बैल चलित हो द्वारा गुड़ाई करने से अंकुरण अच्छा होता है।
- गन्ने की पेड़ी फसल में उर्वरक व सिंचाई दें, तथा कीट प्रकोप होने पर कीटनाशक का प्रयोग करें।
- देर से बोये गये गेहूँ में अंतिम सिंचाई दुग्धावस्था पर करें।
- ग्रीष्म कालीन फसलों में गुड़ाई व सिंचाई १०–१५ दिन के अंतर से करें।
- चारे की फसलों की बुवाई करें।

उद्यानिकी

- आम, चीकू में फल विकसित होने का समय है अत: इन वृक्षों में ८–१० दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।
- आम में फल झड़ने को रोकने के लिए एन.ए.ए. २०–२५ मिग्रा. प्रति लीटर पानी या प्लेनोफिक्स २ मिली. तथा केशथेन २ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर रखे १५–१५ दिन में छिड़काव करें।
- कटहल में फल गलन से बचाव हेतु डायथेन एम–४५ या जिंक कार्बामेट ०.२% प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों को कीड़ो से बचाव हेतु विष प्रपंच का प्रयोग करें या कार्बोरिल डस्ट का भुरकाव करें।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च, भिण्डी आदि फसलों में निंदाई–गुड़ाई कर सिंचाई करें।
- प्याज की तैयारी फसल की खुदाई से १०–१५ दिन पहले पानी देना बंद कर दें एवं पत्तियों को जमीन की सतह से झुका दें।
- प्रारंभ में गेंदा के तैयार पौध की खेत में रोपाई करें, ग्लैडियोलाई कंद की खुदाई कर ठंडे स्थानों पर भंडारण करें।
- नर्सरी में तैयार मेंथा पौध की रोपाई करें,बच के प्रकंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- पत्तियां पीली पड़ने पर कंदो की खुदाई करें तथा धूप में सुखायें।
- नींबू वर्गीय फलो को गिरने से बचाने के लिए २,४ डी १० मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव फलो की आरंभिक अवस्था में करें।
- पपीते की नई फसल लगाने का प्रबंध करें।
- लेमन घास की फसल में गोबर घोल का छिड़काव करें।

पशुपालन

- ब्याने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाने के लिए खनिज मिश्रण ५०–६० ग्राम प्रतिदिन दें।
- पशु ब्याने के १–२ घंटे के अंदर नवजात बछड़े – बछड़ियों को खीस अवश्य पिलायें।
- नवजात बछड़े– बछड़ियों को १०–१५ दिन की आयु पर सींगरहित करवायें।
- पशुओं को संक्रामक रोगों के रोगरोधी टीके समय–समय पर अवश्य लगवाएं।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार एवं मक्का की बिजाई करें।